स्वरसन्धिः

अरुणः पाण्डेयः

- किन्ही दो वर्णों अत्यन्त समीपता(जुडाव) को सन्धि कहा जाता है (परः सन्निकर्षः संहिता)
- सन्धि यदि स्वरों के स्थान पर हो तो स्वर सन्धि , व्यञ्जनों के स्थान पर हो तो व्यञ्जन सन्धि कही जाती है। विसर्ग के स्थान पर विसर्ग सन्धि कही जाती है।
- स्वरसन्धि(अच् सन्धि) के भी यण् गुण वृद्धि आदि तथा व्यञ्जनसन्धि के जश्त्व चर्त्व श्चुत्व ष्टुत्व आदि तथा विसर्गसन्धि के भी उत्व सत्व इत्यादि अनेक भेद हैं।
- स्वरसन्धि के अनेक प्रकार हैं सबका प्रत्येकशः इसमें विवेचन किया जायेगा।
- स्वर सन्धि में यदि स्वर के स्थान पर य्,व्,र्,ल्, हो जाये तो यण् सन्धि, अय् अव् आय् आव् हो जाये तो अयादि सन्धि , ए ओ अर् अल् हो जाये तो गुण सन्धि, ऐ औ आर् आल् हो जाये तो वृद्धिसन्धि इत्यादि सन्धियां होती हैं।

१.यण् सन्धि

सूत्र -इको यणचि।

इ उ ऋ लृ के स्थान पर य् व् र् ल् होता है यदि पीछे स्वर वर्ण हो तो।

जैसे

सुधी +उपास्य> सुध् य् उपास्य = सुध्युपास्य

इति + अपि> इत् य् अपि = इत्यपि , ।

मधु+ अरि> मध् व् अरि = मध्वरि।

धातृ + अंश> धात् र् अंश= धात्रंश।

लृ आकृति > ल् आकृति = लाकृति। इत्यादि

२.अयादि सन्धि

सूत्र – एचोऽयवायावः

ए ओ ऐ औ के स्थान पर क्रमशः अय् अव् आय् आव् होता है , यदि पर में कोई भी स्वर हो तो।

हरे + ए > हर् अय् ए = हरये।

विष्णो+ ए > विष्ण् अव् ए = विष्णवे।

नै अकः> न् आय् अकः = नायकः।

पौ अकः > प् आव् अकः = पावकः।

सूत्र – वान्तो यि प्रत्यये

यदि यकारादि प्रत्यय पर (पीछे) में हो तो ओ और औ के स्थान पर अव् और आव् होता है।

गो + यम्> ग् अव् यम् = गव्यम्।

नौ + यम् > न् आव् यम् = नाव्यम्।

३. गुणसन्धि

सूत्र – आद् गुणः।

अवर्ण(अ आ) के बाद यदि इ उ ऋ ऌ हो तो पूर और पर दोनों के स्थान गुण (ए ओ अर् अल्) होता है।

अ/आ + इ/ई = ए

अ/आ + उ/ऊ= ओ

अ/आ+ ऋ/ॠ= अर् (उरण् रपरः)

अ/आ + ऌ = अल् (उरण् रपरः)

रमा + ईशः > रम् ए शः = रमेशः।

सूर्य + उदयः> सूर्य् ओ दयः = सूर्योदयः।

ब्रह्मा+ऋषिः> ब्रह्म् अर् षिः = ब्रह्मर्षिः।

तव+ऌकारः> तव् अल् कारः = तवल्कारः।

४. वृद्धिसन्धि

सूत्र – वृद्धिरेचि।

अवर्ण(अ आ) के बाद यदि ए, ओ, ऐ, अथवा औ हो तो पूर्व और पर दोनों के स्थान वृद्धि (ऐ औ आर् आल्) होती है।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

अ/आ+ ऋ = आर् (ऋते च तृतीयासमासे + उरण् रपरः)

कृष्ण + एकत्वम् > कृष्ण् ऐ कत्वम् = कृष्णैकत्वम्।

गङ्गा + ओघः > गङ्ग् औ घः = गङ्गौघः।

देव+ऐश्वर्य> देव् ऐ श्वर्य = देवैश्वर्य।

कृष्ण+औत्कण्ठ्य> कृष्ण् औ त्कण्ठ्यम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम्।

सुख+ऋतः > सुख् आर् तः = सुखार्तः।

ओतु और ओष्ठ हो तो वृद्धि सन्धि नही होकर गुण हो जाता है। जैसे कण्ठ + ओष्ठ = कण्ठोष्ठ, स्थूल +ओतु = स्थूलोतुः।

सूत्र – एत्येधत्यूठ्सु।

अवर्ण के बाद यदि एति एध् और् ऊठ हो तो भी वृद्धि सन्धि होती है।

उप + एति> उप् ऐ ति = उपैति , उप+एधते>उप् ऐ धते= उपैधते , प्रष्ठ+ ऊह> प्रष्ठ् औ ह= प्रष्ठौह।

अन्य अनेक वार्तिक हैं जैसे –

अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् = अक्षौहिणी सेना।

प्रादूहोढोढ्यैषैष्येषु = प्रौहः, प्रौढः, प्रौढिः, प्रैषः , प्रैष्यः।

प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानाम् ऋणे = प्रार्णम् , वत्सतरार्णम् , कम्बलार्णम् , वसनार्णम् , ऋणार्णम् , दशार्णम्।

सूत्र – उपसर्गादृति धातौ – अवर्णान्त उपसर्ग के बाद ऋकारादि धातु हो तो वृद्धि होती है।

प्र + ऋच्छति > प्र आर् च्छति = प्रार्च्छति।

५.पररूपसन्धि

सूत्र – एङि पररूपम्

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि एकारादि या ओकारादि धातु हो तो पररूप होता है। तात्पर्य है पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर परवर्ण हो जाता है।

प्र + एजते (प्र् अ+ए जते)> प्र् ए जते = प्रेजते।

उप+ओषति (उप् अ +ओ षति) उप् ओ षति = उपोषति।

वार्त्तिक – शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (शकन्धु आदि में टि को पररूप होता है।

शक+अन्धु(शक् अ+अ न्धु) = शकन्धु, कर्क+अन्धु = कर्कन्धु।

मनस्+ ईषा(मन् अस् ई षा)> = मनीषा , कुल + अटा = कुलटा।

हल + ईषा = हलीषा , पतत्+ अञ्जलिः = पत् अत् अ ञ्जलिः = पतञ्जलिः।

सूत्र – ओमाङोश्च ।

अवर्ण के बाद यदि ओम् अथवा आङ् आता हो तो पररूप होता है।

शिवाय ओम् नमः(शिवाय् अ ओम् नमः) शिवायोम् नमः= शिवायोन्नमः।

शिव एहि(आ इहि) = शिव् अ ए हि >शिव् ए हि = शिवेहि।

६.दीर्घसन्धि

सूत्र – अकः सवर्णे दीर्घः।

अ इ उ ऋ के बाद यदि सवर्ण अ इ उ ऋ हो तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर दीर्घ(आ ई ऊ ॠ) होता है।

दैत्य+अरि (दैत्य् अ+अ रि)> दैत्य् आ रि = दैत्यारि।

विद्या+आलय (विद्य् आ+आ लय)>विद्य् आ लय = विद्यालय।

श्री +ईशः (श्र् ई+ई शः)> श्र् ई शः = श्रीशः

विष्णु+उदयः(विष्ण् उ+उ दयः)>विष्ण् ऊ दयः = विष्णूदयः।

होतृ+ ऋकारः(होत् ऋ+ऋ कारः)>होत् ॠ कारः = होतॄकारः।

७.पूर्वरूपसन्धि

जिसमें दो स्वर वर्णों मे सन्धि होने पर केवल पूर्ववर्ण ही बचे वह पूर्वरूप सन्धि कहलाती है।

सूत्र – एङः पदान्तादति – यदि किसी पद के अन्त में ए अथवा ओ आता हो और उसके बाद ह्रस्व अ आता हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर पूर्व वर्ण(ए अथवा ओ) ही बचता है।

हरे+अव(हर् ए + अ व) >हर् ए व= हरेऽव।

विष्णो + अव (विष्ण् ओ+ अ व)> विष्ण् ओ व = विष्णोऽव।

ऽ(अवग्रह) करें या न करे कोई हानि नहीं है। ऽ यह सूचित करता है कि यहां पूर्व में अकार था।

अन्य उदाहरण – गोऽग्रम् (सर्वत्र विभाषा गोः)

८.प्रकृतिभाव सन्धि

सूत्र – प्लुतप्रगृह्याचि नित्यम्।

प्लुत और प्रगृह्य के बाद यदि स्वर हो तो कोई सन्धि नहीं होती।

सन्धि का अभाव = प्रकृतिभाव।

प्लुत और प्रगृह्य संज्ञा करने वाले अनेक सूत्र हैं उन सभी सूत्रों के द्वारा प्लुत और प्रगृह्यसंज्ञा होती है और फिर इस सूत्र से प्रकृतिभाव हो जाता है।

सूत्र – दूराद्धूते च = आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति।

सूत्र - ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् = हरी एतौ , विष्णू इमौ , गङ्गे अमू ।

सूत्र – अदसो मात् = अमी ईशा , रामकृष्णावमू असाते ।

सूत्र – निपात एकाजनाङ् = इ इन्द्रः , उ उमेशः , आ एवं नु मन्यसे , आ एवं किल तत् ।

सूत्र- ओत् = अहो ईशा , आहो इति, उताहो इति ।

सूत्र – सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे = विष्णो इति , भानो इति ।

॥ कुछ अन्य सूत्र ॥

अवङ् स्फोटायनस्य = गो+अग्रम्>ग् अवङ् अग्रम्= गवाग्रम् = (दीर्घ सन्धि) ।

इन्द्रे च = गो + इन्द्रः > ग् अवङ् इन्द्रः = गवेन्द्रः (गुण सन्धि) ।

मञ उञो वो वा = किमु उक्तम्(प्रकृतिभाव) , किम्वुक्तम् (यण् सन्धि)

इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च= चक्रि अत्र (प्रकृतिभाव) चक्र्यत्र (यण् सन्धि) ।

ऋत्यकः = ब्रह्म ऋषि (प्रकृतिभाव) , ब्रह्मर्षि (गुणसन्धि)

सन्धि बोधक चक्र

पूर्ववर्ण	उत्तरवर्ण	आदेश	सन्धि	उदाहरण
इ/ई,उ/ऊ,ऋ/ॠ,ऌ	पूर्व वर्ण से भिन्न कोई भी स्वर	य् व् र् ल्	यण्	सुध्युपास्य. मध्वरि , धात्रंश, लाकृति इत्यादि
ए,ओ,ऐ,औ	कोई भी स्वर	अय् अव् आय् आव्	अयादि	हरये विष्णवे नायकः पावकः इत्यादि
अ/आ	इ,उ,ऋ,ऌ	ए ओ अर् अल्	गुण	रमेश,सूर्योदय,ब्रह्मर्षि,तवल्कार
अ/आ	ए,ओ,ऐ,औ,	ऐ औ	वृद्धि	देवैश्वर्य कृष्णौत्कण्ठ्य
अवर्णान्त उपसर्ग	ए, ओ	ए, ओ	पररूप	प्रेजते उपोषति
अ इ उ ऋ	अ इ उ ऋ	आ ई ऊ ॠ	दीर्घ	दैत्यारिः, श्रीशः, भानूदयः, होतॄकारः
ए ओ	ह्रस्व अ	ए ओ	पूर्वरूप	हरेऽव , विष्णोऽव